R.N.I.- UP-HIN/2001/3996
ISSN- 2581-6128

स्थापन दिवस के 24वें वर्ष में प्रवेश

संयम • संस्कार • सन्तुलन

शहर समता

(हिंदी साप्ताहिक)

www.shaharsamta.com

शोध पत्र

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव
सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

आशा जाकड़ पर विशेषांक

वर्ष 24 | अंक 29 | रविवार, इलाहाबाद, 8 दिसम्बर 2024 | पृष्ठ 4 | विशेषांक मूल्यः 3 रू0

संपादकीय

इस बार आशा जाकड़

आशाओं की डोर पकड़कर ,
लिखती हैं अपनी कविता ।
भाव विचार का अद्भुत संगम ,
उनकी कविता मानस में ।
बातों का संप्रेषण प्यारा ,
ममतामयी है प्यार दुलार ।
हर बंदे को स्नेह फुहार दे ,
भर देती उसकी सविता ।

तो बात हो रही है आशा जाकड़ की । प्रेम स्नेह की अद्भुत मूर्ति आशा जाकड़ से जब भी मोबाइल पर वार्ता होती

है, उनका स्नेह फूट पड़ता है। बड़े कोमल भाव से वह बतियाती हैं अपने बारे में, अपनी रचनाधर्मिता के बारे में , और अपने निजी परिवार के बारे में । कवयित्री आशा जाकड़ की कविताओं में बरसता है प्रेम, लोगों की पीड़ा और युवाओं के प्रति जागृत भाव, देखिए -

शाम के अंधेरे में ,
विवादों के घेरे में ,
सुनसान सड़क पर,
एक युवा शिक्षित बेरोजगार,

दूसरी बानगी की

साड़ी है नारी का परिधान ,
जिस पर है उसको अभिमान ।
साड़ी में सुशील सौम्या दिखे ,
साड़ी है लज्जा स्वाभिमान ।

तीसरी बानगी

कर्म क्षेत्र से कभी न डिगना ,
धर्म क्षेत्र में कभी न झुकना।
चाहे कितनी मुश्किल आये ,
सत्य पंथ से कभी न हटना।

कवयित्री आशा जाकड़ को उनके इसी रचना कर्म के चलते **नवंबर माह का सावित्री देवी स्मृति सम्मान** से नवाज़ा जा रहा है । संस्थान उनके दीर्घ आयु की कामना करता है । अंक पढ़िए और बताइए कि कैसा लगा। प्रतिक्रिया जरूर दीजिए । अंत में

मां जैसी ममता तेरी ,
आंचल में है प्यार भरा ।
जब-जब बात करूं तुमसे मैं,
प्रेम भरा उपकार भरा ।

उमेश श्रीवास्तव

यादें मन के कोने में

यादें जब मनके कोने में विचरण करती हैं तो मन बहुत आनंदित होता है जितनी पुरानी यादें होती हैं उतनी ही वे रोचक और मनमोहक लगती हैं ।यह रेल यात्रा संस्मरण मेरी शादी का है जो बहुत ही रोचक है । शादी के पूर्व मैंने बस यात्रा की थी, शिकोहाबाद से आगरा , आगरा से अपनी नानी के यहां धौलपुर ।कभी छोटेपन में ट्रेन में बैठे भी थे मुश्किल से 1या डेढ़ घंटे वह भी जनरल वार्ड में ।

सच में ट्रेन यात्रा तो मैंने शादी के समय की थी पूरे 24 घंटे का सफर 28 जनवरी को । मेरी शादी इंदौर में हुई थी। आगरा के पास शिकोहाबाद मेरा मायका है। शिकोहाबाद से आगरा हम बस में आए और आगरा से हमारी ट्रेन देहरादून एक्सप्रेस थी जो देहरादून से आती थी ।हम लोग ट्रेन आने से पहले आगरा फोर्ट स्टेशन पहुँच गए। वहाँ मेरी ननद बोली भाभी वेंटिग रूम में चलते हैं ये साड़ी भारी है ,आप हल्की साड़ी पहन लो क्योंकि हम लोग कल रात आठ बजे पहुँचेगे पूरे 24 घण्टे में। मैंने अटैची मंगाकर हल्की साड़ी निकालकर साड़ी बदली। ट्रेन आने में एक घण्टा था। इसलिये वहीं बैठकर चाय पी और ट्रेन का इन्तजार करने लगे। जैसे ही ट्रेनआई ,सब लोग खुशी-खुशी ट्रेन की ओर अपना सामान लेकर चढ़े और आराम से अपनी अपनी बर्थ पर बैठ गए। एक बोगी में 20 बर्थ और दूसरे बोगी में 15 बर्थ रिजर्व थीं। मेरे डिब्बे में मेरे छै सगे देवर और सात चचेरे देवर, मेरी ननंद तथा मेरे ससुर व तीन चाचा ससुर बैठे थे और साथ में मेरी छोटी बहन भी। मेरी छोटी बहन मेरे साथ आई थी। मेरे पति ,उनके दोस्त व अन्य रिश्तेदार दूसरे डिब्बे में बैठे थे । ट्रेन के चलने पर मेरे ससुर और उनके भाइयों ने खाने की डलिया खोलकर सभी को बड़े प्रेम से खाना खिलाया ।मैंने और मेरी बहन ने ननद के साथ खाना खाया ।खाना खाकर थोड़ी बहुत बात चीत करके सभी सो गए ।मेरी नींद कोसों दूर थी ,मेरी ननद मेरा बहुत ख्याल रख रही थी लेकिन थोड़ी देर में वह भी सो गई ।मैं और मेरी बहन एक ही सीट पर लेट गए। थ्री टायर में बैठने का यह पहला मौका था। उसके पहले इतनी लंबी यात्रा हमने कभी नहीं की थी। कब नींद आ गई पता ही नहीं चला । 6:00 बजे सुबह कोटा आने पर सब लोग उठे क्योंकि वहां ट्रेन आधा घंटे रुकती थी। काफी लोग उतर कर प्लेटफार्म पर ब्रश करने लगे। मै , मेरी बहन व ननद ने ट्रेन में ही ब्रश किया तभी मेरे देवर चाय लेकर आए और हमने चाय पी। तब हमने सबको ध्यान से देखा क्योंकि रात के अंधेरे में तो कोई समझ में नहीं आ रहा था ।कोटा निकल जाने के 2 घंटे बाद सभी ने नाश्ता किया लड्डू और कचौड़ी का ।तब मेरी ननद ने अपने सभी भाइयों से मेरा परिचय कराया कि कौन सगे हैं कौन चाचा जी के पुत्र हैं और यह भी बताया कौन किस- किस क्लास में पढ़ता है । मेरे सबसे बड़े देवर 19 वर्ष के थे.और बी एस. सी. में पढ़ रहे थे।,ननद बी.ए. में पढ रही थी बाकी पाँच देवर सातवीं ,छटवीं,पाँचवी ,चौथी व सबसे छोटा देवर तीसरी कक्षा में पढ़ता था।सभी को पता था कि मैं हारमोनियम बजाती हूँ और गाना गाती हूं क्योंकि मुझे शादी में हार मोनियम दिया गया था ।कुछ देवर कहने लगे भाभी गाना सुनाओ । मैंने कहा पहले आप लोग सुनाइये ।तब मेरे 4-5 देवर ने 'ओह रे ताल मिले नदी के जल में ,नदी मिले सागर 'गाया। कुछ ने जोक्स सुनाए। फिर सभी ने अंताक्षरी खेली। अंताक्षरी खेलते , गाने गाते, 2 घंटे कब बीत गए ,मालूम ही न पड़ा।फिर मेरे ससुर आए कहने लगे यह टीचर है तुम सब को पढ़ाएगी। फिर सभी ने खाना खाया। खाना खाने के बाद बात करते-करते ही समय कहाँ निकल गया, मालूम ही न पड़ा। 4:00 बजे रतलाम आया हम सभी लोग रतलाम स्टेशन पर उतर गए. और देहरादून एक्सप्रेस मुम्बई चली गई । ट्रेन जाने के बाद मेरे पति ने अपने पिताजी से कहा बाबूजी शादी की चौकी तो ट्रेन में ही चली गई , हम सब बैठकर ताश खेल रहे थे ,ट्रेन के रुकने पर उतरकर आ गए। बाबूजी नाराज हुए ,बोले घर चलो अब तुम्हारी माँ तुम पर कितना बिगड़ेगी ,उसी को जवाब देना और वह तुम पर नहीं हम पर बिगड़ेगी कि शगुन की चीज रास्ते में ही छोड़ दी ।

थोड़ी देर के बाद पैसेंजर गाड़ी आई ,उसमें सब लोग बैठ गए । सूर्यास्त होने लगा था सभी ने अपने ऊनी वस्त्र पहन लिए। ठण्ड यू.पी. की अपेक्षा कम थी। फतेहाबाद आने पर सभी ने गुलाब जामुन खाएं ।जैसे-जैसे इंदौर पास आता जा रहा था ।सभी के चेहरे पर खुशी की लहर दिखाई दे रही थी। पैसेंजर गाड़ी छोटे-छोटे स्टेशनों पर रुक रही थी ।2- 3 देवर हर स्टेशन पर उतरते और फिर जल्दी से गाड़ी में चढ़ते। उन लोगों को ट्रेन से उतरना- चढ़ना ,बड़ा आनंददायक प्रतीत हो रहा था शायद वे लोग भी पहली बार ही इतने लंबे सफर के लिए ट्रेन में बैठे थे। इंदौर आने पर सब खुशी -खुशीअपना सामान लेकर ट्रेन से उतरकर सभी चचेरे देवर नमस्ते कर चले गए यह कहकर कि भाभी कल घर पर आयेंगे और आपसे गाना सुनेंगें।।

मैं ननद के साथ वेटिंग रूम पहुँची और वहाँ अपनी साड़ी बदली। उसके.बाद टैक्सी में बैठकर घर पहुँचे। ये थी मेरी पहली रोचक रेल यात्रा।

29 तारीख मेरे लिए बहुत शुभ दिन था।उस दिन मैंने अहिल्या नगरी मैं अपने कदम रखे.थे।उस दिन से ही मेरा इंदौर का सफर प्रारंभ हुआ ।

आशा जाकड़ की चार कविताएं

'वृद्धाश्रम हो रहे वरदान'

अब वृद्धाश्रम हो रहे, वृद्धों के लिए वरदान।
वहाँ मिल रहा सुख, गैरों से अनूठा सम्मान।।

समय से मिले भोजन और प्यार के बोल ।
निःस्वार्थ सेवा भावना, परमार्थ अनमोल।।

सुबह उठ करते प्रार्थना ,जप, तप, भजन।
मिलता असीम आनन्द अपनत्व का गगन।।

बच्चों से दूर नयनों में बसता है अश्रु सागर
सभी के मध्य मिलती है प्रसन्नता की गागर ।।

रोगी होने पर भी मिलता अपूर्व सेवा भाव।
इलाज अच्छा मिलता,सच्चा परमार्थ भाव।।

बच्चों को दी सुख छाँह,पर मिली प्रताड़ना।
परस्पर वार्तालाप से भूल जाते निज वेदना।।

करते गायन,वादन और सुनते मधुर संगीत।
बतियाते, मुस्कुराते भूल जाते दुख के गीत।।

वहाँ रह याद आता उन्हें मुस्कराता उपवन।
हृदय पुलकित,मिल जाता मन का वृंदावन।।

वृद्धाश्रम आज सचमुच होरहे ऐसे देवालय ।
होती है वृद्धों की सेवा जय- जय वृद्धालय।।

सरदार भगत सिंह

देशभक्त वीर भगत को नमन
जिसने देश की आजादी हेतु
हंसते-हंसते फाँसी का फंदा
वंदे मातरम् कह चूम लिया ।।

वीर भगत सिंह का बलिदान
देश की स्थिति देख रो रहा है
जन- जन में स्वार्थ- दुराचार
भ्रष्टाचार सर्वत्र फैल रहा है ।

रह गई है उसकी कहानियाँ
बची केवल उसकी स्मृतियां
पर नहीं भूलेंगे हम कभी भी
उस बहादुर की बलिदानियाँ

पावन है यह भारत वसुन्धरा
जहाँ ऐसे वीर ने जन्म लिया
अपना जीवन बलिदान कर
निज देश- कर्ज चुका दिया।।

करते हैं उस शहीद को नमन
उनकी माता का अभिनन्दन
अपने कोख से वीर पुत्र दिए
अश्रुपूरित पितृ श्रद्धा सुमन।।

गजल

जब- जब हम बेसहारा हुए
तब तुम हमारा सहारा हुए।।

भीग गया मेरा मन अंगना
नभ में बदरा कजरारे हुए।।

आसमान में बादल छाए हुए
आँखों में उम्मीद बसाए हुए ।।

शीतल पवन अठखेलियाँ खेले
कपोलों पर केश मतवाले हुए।।

बातों ही बातों में इशारे हुए
हम उनके और वे हमारे हुए।।

मनाई दिवाली

जगमग जगमग दीप जले
देखो खूब मनाई दिवाली।
खेतों में नई फसल झूमे
छाई है देखो हरियाली।
बाजार बेइन्तहाँ भीड़ उमड़े
आई है देखो खुशहाली ।
सबके तोरण द्वार सजे
रंग बिरंगी सजी है रंगोली ।
अंगना में माँडने बने
बगिया में रंगीन फूल खिले।
सभी ने नए-नए कपड़े पहने
मन सबके खुशी मिले।
गणेश लक्ष्मी पूजन हुए
झिलमिल - झिलमिल दीप जले।
मिष्ठानों के सुन्दर भोग लगे
आरती- वन्दन नभ में गूँजे।
चरण स्पर्श कर ढोक दिए
छोटा को खूब आशीष मिले।
गुजिया -पापड़ी सबने खूब चखे
फुलझड़ी ,-पटाखे खूब चले ।
उल्लास- उमंग की डोर सजे
धूम धड़ाका खूब हिले -मिले।
दीपावली पंच दिवस का पावन पर्व
पूरे भारत मे धूमधाम से खूब मने।
कल गोवर्धन की पूजा होगी
अन्नकूट पर्व पर मंदिरों में भोग लगेगा ।
,परसों भाई दूज होगी
भाई के मंगल तिलक लगेगा।
दीपावली पर्व का समापन होगा,
दीपावली मिलन दस दिन तक चलेगा।।
शुभ दीपावली

जलहरण

मणिकर्णिका बाला थी
वाराणसी में जन्मी
माता हुई भागीरथी
पिता मोरोपंत हुए ।।

बचपन से वीर थी
अस्त्र-शस्त्र चलाती थी
घुड़ सवारी करती
तात्या टोपे सखा हुए ।।

नौ वर्ष की थी उमर
झांसी राजा गंगाधर
के संग पाणिग्रहण
लक्ष्मीबाई कहलाई।।

रानी थी वीर अपार
रण में ले तलवार
अरि ने धोखे से वार
रानी शहीद हो गई।।

बाल गीत

आओ बच्चों आओ
आओ माता के रूप दिखाएं ।।

पहले दिन माँ शैलपुत्री रूप में आएं ।
भक्तों ने स्वागत में खूब ढोल बजाएं।।

दूजे दिन माँ ब्रह्मचारिणी रूप में आएं
सब भक्तन पर अपनी कृपा बरसाएं।

तीसरे दिन माँ चंद्रघण्टा रूप में आएं
माँ अपने भक्तों पर आशीर्वाद लुटाएं।।

चतुर्थ दिवस माँ कुष्मांडा रूप में आएं
अष्टभुजा माता भक्तों पर स्नेह बरसाएँ।।

पंचम दिन माता स्कन्द रूप में आएं
भक्त वत्सला सर्वत्र खुशियाँ बरसाएँ।।

षष्टम् दिन माँ कात्यायनी रूप में आएं
भक्त के जीवन में सुख- शांति लाएं।।

सप्तम दिन माँ कालरात्रि रूप में आएं
अपने भक्तों के सभी कष्ट दूर भगाएं।।

अष्टम दिन माता महागौरी रूप में आएं
भक्तों ने पूजन -अर्चन कर वन्दना गाएं।

नवम् दिन माँ सिद्धिदात्री रूप में आएं।
भक्तों ने नृत्य कर मनोरथ पूर्ण कराएं।।

श्री कृष्ण

भादों मास की
कृष्ण पक्ष की अष्टमी
जय कान्हा की

आओ कृष्ण जी
है स्वागत वंदन
अभिनंदन

कृष्ण गोपाला
जय हो नन्दलाला
मन मोहना

भारतवर्ष
कृष्ण की जन्माष्टमी
सर्वत्र हर्ष

सजी पालकी
जै कन्हैया लाल की
गाएँ बधाई

चलो मनाएँ
कृष्ण का जन्मदिन
ताली बजाएं

बाल गोपाल
मन्द- मन्द मुस्काते
कन्हैयालाल

डिग्रियों का गट्ठर

शाम के अंधेरे में ,
विवादों के घेरे में ,
सुनसान सड़क पर,
एक युवा शिक्षित बेरोजगार,
हाथ में लिए डिग्रियों का गट्ठर,
आँखों में उमड़ता ,
आँसुओं का समन्दर,
काश कोई डिग्रियाँ ले ले,
एक अदद नौकरी मुझे दे दे ।
अचानक एक ख्याल ने उसे उकसाया,
डिग्रियों को उसने सुलगाया,
हर्ष से विह्वल होकर,
भावना में बहकर चिल्लाया,
तेरे ही कारण दर-दर भटकता रहा,
मजदूरी करने में शर्म करता रहा ।
आज तू नहीं है मेरे साथ ,
अब कर सकेंगे श्रम मेरे हाथ।।

हाइकु

भोले भंडारी
सनो अर्ज हमारी
मन शांति दो

सोमवार को
शिव- व्रत करती
पूजें पार्वती

हे जटाधारी
सिर पे गंगा धारी
भक्तों की सुनो

शिव विराजे
कैलाश पर्वत पे
गौरा साथ में

शिवनंदन
गणेश कार्तिकेय
गौरी वन्दन

शिव -पार्वती
मैं वंदन करती
देनाआशीष

शिव ने पिया
कंठ में हलाहल
तन पे छाल

शीश पे चंद्र
कर डमरू सोहे
भक्तों को मोहे

शिव की पूजा
भक्त मन से करें
वन्दना करें

भक्त बोलते
ओम नमः शिवाय
रामेश्वराय

गीत

ओहो दीपावली मनाएं खुशियों के दीप जलाएं
शुभ दीपावली शुभ उ शुभ दीपावली ।।

दूर गगन में फैल रहा है अज्ञान का अंधियारा
दीप जलाकर रौशन कर दें फैलाएँ उजियारा
झिलमिल झिलमिल रोशनी फुलझड़ी खूब चलाएं
शुभ दीपावली,शुभ दीपावली, शुभ दीपावली।।

खेतों में हरियाली छाई गायें खुशी का राग रे
देश हमारा उन्नति करेगा ऐसा मन विश्वास रे
हिल मिल पर्व मना कर एकता भाव दर्शाएँ।
शुभ दीपावली,शुभ दीपावली,शुभ दीपावली।।

आदर्शों के दीप जलाकर कर दे धरा उजियाली जगमग
-जगमग रोशन कर दे,घर-घर हो दिवाली।
नफरत- ईर्ष्या दूर भगाकर प्रेम के फूल खिलाएं
शुभ दीपावली ,शुभ दीपावली ,शुभ दीपावली।।

करवा चौथ

करवा चौथ का पावन है त्योहार
सभी करते अपनी चाँद के दीदार
लाता है घर खुशियों के नवभंडार
साजन का उमड़ता खूब प्रेम अपार।।

चन्द्रमा की शोभा है अतीव न्यारी
मनभावन किरणों की छवि प्यारी
सजाकर सुहाग- पूजा की थाली
चतुर्थी पर चन्द्र अर्चन करें नारी।।

सुहागिनें करती हैं चतुर्थी का व्रतं
पति की दीर्घायु हेतु रखती हैं व्रत
सुहाग की रक्षा व मंगल- कामना
कष्ट निवारण हेतु करती है ये व्रत ।।

सुहागिनों के प्रेम पर्व का ये दिन
जीवन की अपूर्व बहारों का दिन
पिया के प्रिय उपहारों का है दिन
अगणित खुशियों का अनूठा दिन।।

माँग का सिंदूर सुहाग का प्रतीक
हाथों में चूड़ियां खनकती सटीक
मेहंदी हाथ सजती पिया नाम की
पैरों में पायलिया रुनझुन बजती।।

प्यार, आस्था,विश्वास का ये पर्व
नव प्रेम,सुखद जीवन का है पर्व
विनम्रता व पवित्रता का यह पर्व
नई उमंग,नवीं मंजिल का ये पर्व

बेटी दिवस पर

बेटी जीवन का सुंदरतम उपहार
जीवन आती खुशियों की बहार
जिस घर बेटी की मधुर आवाज
सुख शान्ति का मोहक संसार।।

बेटियाँ ही घर की शान- मान है
बेटियाँ घर की मान- मर्यादा है
बेटियाँ अपने घर की रौनक है
बेटियाँ घर के मंदिर की पूजा है।।

बेटियाँ अपने पिता की जान है
बेटियाँ अपनी माता की आन हैं
बेटियां एक ही नहीं दो कुल का
बढ़ाती सम्मान और यशगान है।।

बेटियाँ माता -पिता की आस है
बेटियाँ ही जीवन का विश्वास है
बेटियाँ कुल का अनमोल रतन है
बेटियों से आता घर में प्रकाश है।।

सच,बेटियाँ हैं जीवन का संगीत
बेटियाँ से है भाई-बहन की प्रीत
बेटियाँ निभाती हैं कुल की रीति
बेटियाँ ही गाती त्योहारों के गीत।।

गजल

आँगन में दीवार क्या ठहर गई ?
खास रिश्तों की बखिया उधड़ गई।।

सुबह- शाम होता था हँसी -मजाक।
वहाँ मौन की दीवार पसर गई।।

महकती थी प्यार की ये बगिया।
नफरत की बागड़ वहाँ लहर गई।।

मेहनत से बना था आशियाना।
प्यार की ये पौध कब उखड़ गई? ओ

संजोये दादी ने ऊँचे सपने।
बहू से घर की खुशियाँ बिखर गई।।

आँगन कच्चा था, प्रेम सच्चा था ।
पक्की होते ही बगिया उजड़ गई।।

पिता की डाँट

माता जीवन दायिनी , पिता देते श्वास ।
पिता की डाँट -मार से, जीवन होत विकास ।।

माता होत है धरती , पिता होत आकाश ।
पिता की डाँट डपट से,बाल करें प्रयास।।

पिता दिखते कठोर हैं कोमल हृदय होय।
बच्चों को वे डाँटते , मन में प्यार होय।।

पिता बस इतना चाहें ,जीवन रहे बहार ।
बच्चों को वे डाँटते ,सुखी रहे संसार ।।

घर अनुशासन चाहते, पिता का रखो मान ।
गर पिता का शासन है , सुख,शान्ति सम्मान।।

घर पिता का शासन हो, घर अनुशासन होय।
बाल संस्कारी बने, घर संस्कार होय।।

बच्चे सुबह उठकर के , कहें पिता प्रणाम ।
पिताजी कड़क बोलते, पिता का करें नाम।।

पिता करते डाँट-डपट, सब करते सम्मान।
बच्चे आज्ञा मानते,कुल का बढ़ता मान।।

मेरी उडी रे पतंग

हाथ में चरखी और पतंग
छाई रही मन में नई उमंग
आओ मित्र आज हमारे संग
तुम संभालो चकरी, मैं पतंग

डोर बांधना मुझे नहीं आता
डोर बांधना., मुझे सिखाओ
फिर चलो मित्र पतंग उड़ायें
खुशियों का संसार सजाएं

मौसम है मस्त सुहावन
बह रही शीतल मंद पवन
है पतंग बेताब उड़ने को
ऊपर आसमान छूने को

जितनी तेज हवा चले
ऊपर उडती-उड़ती जाए
कट जाए तो नीचे आये
नव उम्मीदों से टकराये

आशा जाकड़ की चार कविताएं

रहती उमंग की जवानी
कहती,हार न मान कभी
संघर्ष है,जीतकी कहानी

सारी(साड़ी)

साड़ी है नारी का परिधान
जिस पर है उसको अभिमान
साड़ी में सुशील सौम्या दिखे
साड़ी है लज्जा स्वाभिमान

साड़ी है नारी का गहना
जब-जब भी उसने पहना
लक्ष्मी देवी सी प्यारी लगे
वाह प्रशंसा में क्या कहना

नारी जब पहनती है साड़ी
लगती बड़ी सुंदर है नारी
घूंघट जब वह करती है
लगती वह भारतीय नारी

चाहे पहने सलवार कुर्ता
या चूड़ीदार पजामा कुर्ता
साड़ी की अपनी है गरिमा
सजती साड़ी में ही वनिता

धार्मिक पूजा- पाठ करें
मंदिर वंदन -आरती करें
सिर ढकती है जब नारी
संस्कारी सुशील लगे नारी

चाहे पढ- लिख जाए नारी
पर धारण करती है सारी
पल्ले की अपनी ही शोभा
जचती साड़ी में शुभ नारी

साड़ी में लिपटी जब नारी
भारत की महिमा न्यारी
बड़ों के चरण स्पर्श करें
सम्मान का प्रतीक है साड़ी

भारतीय परिधान है साड़ी
नर नारी पहनत थे साड़ी
जितनी आवरण में वह रहे
लगती वह आकर्षक नारी।।

महामना पंडित मदन मोहन

माँ भारती की महान सन्तान
महामना पंडित मदन मोहन
मां मुन्नी देवी ,पिता ब्रजनाथ
उनके चरण शत -शत नमन

शिक्षा के थे वह अनुपम प्रेमी
5 वर्ष आयु से विद्यारंभ किया
बाधाएं आई ,पढना नही छोडा
अध्यापन किया और पढ़ाई की

महात्मा गांधी जी के बहुत प्रिय
युग के आदर्श पुरुष कहलाते
पंडित मदनमोहन को महामना
इस उपाधि से सम्मानित किया

बसंत पंचमी को स्थापना की
बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की
विश्वविद्यालय के कहलाए प्रणेता
एनी बेसेंट ने भी दिया सहयोग

प्राचीन सभ्यता- संस्कृति के साथ
आधुनिक ज्ञान का किया समर्थन
शिक्षा की समृद्धि के लिए किया
पूरा जीवन देश उत्कर्ष समर्पण

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में
ज्ञान का अनुपम दीप जलाया
भारत ही नहीं सम्पूर्ण जगत में

सर्दी

ठण्ड इतनी तेज पड़े ,पेड़ खड़े हैं मौन।
आवाजाही चल रही नहीं पूछे तू कौन।।

सर्दी आज बहुत पड़ी कैसे करें बचाव।
ऊनी कपड़ा पहन लो बैठो पास अलाव।।

जाड़ा गजब छाय रहा सब जगह सांय -सांय।
हाथ पैर भी कंपि रहा पवन हँसे भय -भांय।।

सर्दी ऐसी पड़ रही घमण्ड दूर भगाय।
बहुत अकड़ के चलत थे बैठे सिकुड़ रखाय ।।

सर्दी कड़कू पड़ रही हाथ पैर जम जाय।
धुन्ध में कछु दिखे नहीं नासिका हवा साय।।

हे शिव भोले भंडारी

हे शिव भोले भंडारी
सुन लो प्रार्थना हमारी

मन में छाया कष्टों का अंधेरा
कर सकते हो तुम ही उजेरा
भोलेनाथ भक्तों के रखवाला
नई आशाओं का करो बसेरा
सपने पूरा करना त्रिपुरारी
हे शिव भोले भंडारी
सुन लो प्रार्थना हमारी

नारी की यहां होती है पूजा
नहीं है नारी की कोई सुरक्षा
मासूमों के आवरण उघड़ते
भोले नहीं आता क्या गुस्सा
बस इतनी सी अरज हमारी
हे शिव भोले भंडारी
सुन लो प्रार्थना हमारी

रोजाना तुम्हें जल चढ़ाती हूं
पूजा -अर्चना ,जाप करती हूं
समीपस्थ नागराज विराजते
हे अंतर्यामी वन्दना करती हूं
खुशियों का सागर लहराओ
हे शिव भोले भंडारी
सुन लो प्रार्थना हमारी

करती तुमसे विनती भगवन
दिखाओ अपना तांडव नृत्य
ऐसा त्रिशूल चलाओ शिवजी
दुराचारियों का करो सफाया
सुख शांति कर दो जटाधारी
हे शिव भोले भंडारी
सुन लो प्रार्थना हमारी

मकर संक्रांति

मकर संक्रांति का पावन पर्व।
हमभारतीय करते इसपर गर्व।।

तिल गुड़ की है इसमें मिठास ।
दूर करती रिश्तों की खटास।।

तिल- गुड़ रखते काया निरोग।
खाओ-खिलाओ तिलगुड़-भोग।।

प्रेम-भाव से खूब उड़ाओ पतंग।
हिल - मिल रहो सभी के संग।।

पतंग छुए आस्माँ की ऊंचाइयां ।
पायें आप सफलता की ऊंचाइयां।।

गुड़ से मीठे रिश्ते महकते रहें ।
परस्पर सम्बन्ध चहकते रहे।।

जीवन में खुशियों का रंग भरदे।
वासंती खुशनुमा उल्लास भरदे।।

रखो ऊँचा उठने की स्वकामना।
दूसरों को आगे बढ़ने की प्रेरणा।।

संक्रांति पर सभी को शुभकामना।
उन्नति,सफलता , यश की कामना ।।

प्यारी बिटिया हूँ

मैं एक नन्ही सी गुड़िया
मैं इक प्यारी सी बिटिया
आंखों में मेरे ढेरों सपने
अपनी दादी की मुनिया।

मैं मम्मा की प्यारी बेटी
मैं हूँ पापा की न्यारी बेटी
मैं हूँ सबकी राजदुलारी
मैं दादा की लाड़ली बेटी।

खूब पढूंगी खूब लिखूंगी
जग में ऊचा नाम करूंगी
भैया जैसा ऊँचा पढ़कर
सारे ही सपने पूरे करूँगी।

बिटिया ही घर की शान है
बिटिया मोहक मुस्कान है तो
बिटिया से घर की रौनक है
बिटिया घर का अभिमान है।

.मैं ही भैया के राखी बाधूँगी
माथे पर तिलक लगाऊंगी
जब भी दीपावली आएगी
भैया संग फुलझड़ी चलाऊँगी।

मैं भारत की जागरूक बेटी,
मुझे पढ़ना और पढ़ाना है।
अब न किसी से डरूँगी में
मुझे भी वीरांगना बनना है ।।

धूप

मन लुभाती
गुनगुनी सी धूप
बड़ी सुहाती

प्रकृति रूप
खिलखिलाती धूप
झिलमिलाती

नदी का पानी
सोने सा दमकता
सूर्य रोशनी

मनभावनी
प्रातःकालीन धूप
तन सुहानी

वासंती धूप
खिल रहा है रूप
आई उमंग

चढ़ती धूप
गर्मी देह तपाती
तमतमाती

धूप होती है
अति सुखदायक
लाभदायक

विटामिन डी
धूप में ही मिलता
पोषण कर्ता

गाँधी बापू

आओ हम सब भारत माँ के
सपूत गाँधी का दर्शन करायें
उनके उच्च विचार समझाए
महात्मा गाँधी के सपनों से
हम एक नया भारत बनाएं।।

अहिंसा का बिगुल बजा कर
भारत को आजादी दिलाई
चरखे से सूत कातना सिखा
हम सबको खादी पहनाई
छुआछूत का भेद मिटाकर
समानता का पाठ पढ़ाएँ।

गांधीजी का आदर्श जीवन
सिद्धांतों का सरल जीवन
करते हैं हमारा मार्गदर्शन
बनाएंगे हम समृद्ध भारत
गाँधी बापू को करते नमन
चरणों में शत -शत वन्दन।।

आदरणीया लता दीदी को श्रद्धांजलि

तुम्हारे जाने से पूरा जहाँ हो गया उदास
मौन है सारी जमीं मौन होगया आकाश
कानों को होता नहीं है अभी भी विश्वास
कि तुम चली गई हो परम पिता के पास।

इन्दौर में जन्मी इन्दौर करता तुम पर नाज़
विश्व में गूँजती थी तुम्हारी मधुर आवाज
तुम्हारे जाने से गिर गई जैसे सुरों पर गाज़
तुम्हारे वियोग मे सिसक रहे हैं सब साज।

तुम सचमुच भारत की शान-बान- मान थी
तुम संगीत जगत का अनूठा अभिमान थी
तुम्हारे स्वर में मनमोहक बला की जान थी
तुम स्वर साधना का हृदयस्पर्शी सम्मान थी।

इंदौर के लोगों की थी बस एक अभिलाषा

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य,
सतना ब्यूरो - डॉ ऊषा सक्सेना,
रीवां ब्यूरो - साधना तिवारी,
लखनऊ ब्यूरो - मंजु सक्सेना,
जबलपुर ब्यूरो - शैली सेठ,
लुधियाना ब्यूरो - श्रद्धा शुक्ला,
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,
गोरखपुर ब्यूरो - चित्रा श्रीवास्तव,
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज,
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी,
प्रयागराज ब्यूरो - डॉ आकांक्षा पाल,
भीलवाड़ा ब्यूरो - डॉ राजमति पोखरना,
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,
शिलांग ब्यूरो - डॉ अनीता पंडा,
बिलासपुर ब्यूरो - स्मृति मिश्रा 'रीति,
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,
कानपुर ब्यूरो - सीमा वर्णिका,
भोपाल ब्यूरो - दीपमाला तिवारी,
दमोह ब्यूरो- भावना शिवहरे,
मण्डला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी,
आरा ब्यूरो - सिम्पल सिंह,
बिजनौर ब्यूरो - ऋतुबाला रस्तोगी,
पठानकोट ब्यूरो - क्षमा लाल गुप्ता,
सप्तरी नेपाल ब्यूरो - करुणा झा,
धमतरी ब्यूरो - कामिनी कौशिक,
रामपुर ब्यूरो - चंद्रिका कुमार 'चांदनी',,
मुरादाबाद ब्यूरो - अभिव्यक्ति सिन्हा,
कटनी ब्यूरो - मीरा भार्गव,
पटना ब्यूरो - अंजू भारती

शहर समता (हिन्दी साप्ताहिक) के वार्षिक एवं तीन वर्षीय सदस्य बनें।

वार्षिक सदस्यता के लिए -200/- तीन वर्षीय सदस्यता के लिए -500/-

कृपया 'शहर समता' के नाम से चेक या आनलाइन भेज सकते है।
IFSC Code- PUNB0100120 A/c.-1001050011592

व्यवस्थापक
शहर समता (हिन्दी साप्ताहिक)
289/238 ए (अनंत भवन) कर्नलगंज ,इलाहाबाद-211002

पीडीफ़ के लिए
shaharsamta.blogspot.com
पर जाएँ ।

संस्थापक
स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332 Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।

आशा जाकड़ की चार कविताएं

पर पूरी नहीं हो सकी वह जीवन की आशा
काश इंदौर नगरी को कुछ अपूर्व कर जाती
तो हमारी अहिल्या नगरी और महक जाती।

बच्चों की आवाज में खूब मधुर गीत गाए
देशभक्ति गीतों पर नेहरूजी अश्रु भर लाए
36 भाषाओं में खूब अनगिनत गीत गाए
पद्मश्री,भारतरत्न तुम्हारी झोली को सजाए।

भीष्म प्रतिज्ञा से इस देश का मान बढ़ाया
संघर्ष कर परिवार का नाम आगे बढ़ाया
तुम्हारी आवाज में गज़ब का जादू छाया
भारत को स्वर - सम्राठ सम्मान दिलाया।

कोकिल कंठी हम तुम्हें कैसे भूल पाएंगे
तुम्हारे गीत ही अब बार -बार याद आएंगे
तुम्हारी याद में अब तुम्हारे ही गीत गाएँगे
फिर मौन होकर आँखों से अश्रु बहाएँगे।

तुम थी माँ वीणावादिनी सरस्वती समान
तुम्हारे गीतों से आती एक मधुर मुस्कान
तुम्हारी आवाज़ ने दी तुम्हें अमिट पहचान
जिसने बनाया जगत में चिर अमर महान।

हाथ जोड़ कर रहे भारतवासी सादर नमन
मूक नयनों से अर्पित करते हैं श्रद्धा सुमन
स्वर साम्राज्ञी याद करेंगे भारत के जनमन
शीघ्र आकर भारत को करना फिर से चमन।।

महान योद्धा गुरु गोविंद सिंह

गुरु गोविंद सिखों के दसवें गुरु थे
1966 पौष सुदी को पटना जन्मे
माता गुजरी ,पिता गुरुतेग बहादुर
कहलाए थे सिखों के नौवें गुरु

गुरु गोविंद थे महान योद्धा, चिन्तक
कवि , भक्त और नेता आध्यात्मिक
1699 में धर्म समाज की रक्षा हेतु
वैशाखी को खालसा पंथ- स्थापना

कश्मीरी पंडितों के लिए 1675 में
गुरु तेग बहादर ने चांदनी चौक में
बलिदान दे जाति भेद खत्म किया
सिखों में आत्मसम्मान पैदा किया

गुरु गोविंदसिंह की तीन पत्नियां
माता जीतोजी ,सुंदर ,साहिब कौर
बाबा अजीत सिंह चमकौर सिंह ने
धर्म -रक्षा के लिए शहादत दी थी

छोटे साहबजादे बाबा जोरावर सिंह
और फतेह सिंह पिता समान थे वीर
सरहिंद के नवाब ने जिंदा ही दीवार में
छै और नौ वर्ष के मासूमों को चिनवाया

धर्म- संस्कृति ,आन- बान - शान हेतु
अपना पूरा परिवार कर दिया कुर्बान
ऐसे थे महान योद्धा गुरु गोविंद सिंह
करते उनके चरणों में शत -शत प्रणाम ।।

वन की पुकार

वन वन कर रहे पुकार
मत करो हम पर प्रहार
हरी - भरी हरियाली देते
जीवन में लाते सदाबहार

औषधियों का हम भंडार
बीमारी का करूँ उपचार
हम तो करते हैं उपकार
फिर क्यों करते अत्याचार

देते हम शुद्ध ऑक्सीजन
मिलता प्राणी को जीवन
ण्ध्2 का करते हम पान
वातावरण में लाते हैं जान

रबर ,गोंद ,लाख हम देते
जड़ी - बूटियां भी हम देते
प्राणों का करें हम संचार ,
कुल्हाड़ी से मत करो वार।

जन्म से मृत्यु पर्यन्त तक
लकड़ी देते , ईंधन भी देते
मकान, फर्नीचर भी बनाते
खिलौनों से सजाते संसार।।

कागज भी हम जग को देते
तब तुम शिक्षा प्राप्त करते
ज्ञानी और पंडित तुम बनते
जीवन का करते हैं निर्माण।।

हरियाली से ही वर्षा लाते
वर्षा से ही नवजीवन पाते
नदियाँ नाले लबालब भरते
जीवन को करते खुशहाल।।

कुछ तो हम पर करो रहम
नहीं चाहते कुछ तुमसे हम
फल-फूल दे खुश होते हम
हम तो देते सबको उपहार

नारी की पुकार

भारत देश में ,
जहाँ पुजती है नारी,
सरे आम लुटती है नारी,
पुरुष जो उसका है रक्षक ,
वही बन गया है आज भक्षक।
चाकू की नोंक पर ,पैसों के बल पर,
करता दिन -दहाड़े हत्या और बलात्कार ,
वह चिल्लाती है, छटपटाती है,
मनुष्य की भीड़ मदद को नहीं आती है ।
सब एक दूसरे का मुँह देखते हैं ,
कायर बन आँखों पर पट्टी बाँधते हैं
वह कराह कर दम तोड़ देती है।
तब सहानुभूति की फुसफुसाहट होती है,
यहाँ तो आए दिन यही होता है,
फिर हमारे दुख में कौन रोता है,?
जान बूझकर कौन कफन औढ़गा ?
अपना परिवार हेतु क्यों दुख भोगेगा?
महापुरुषों के इस देश में,
पर संवेदना शून्य इस देश में,
नारी का भविष्य में है खतरे में ,
इस देश का भविष्य क्या होगा?
जहाँ जननी और भगिनी
दोनों ही असुरक्षित है।।

आया क्रिसमस का त्योहार

आया क्रिसमस का त्योहार
लाया खुशियों का उपहार
जन्मदिवस यीशु को आयो हम आज मनाएँ
शांति ,दया ,प्रेम ,अहिंसा जन -जन फैलाए
घर घर में आई बहार ,
आया क्रिसमस का त्योहार।

धन्य हुई माता मरियम तेरी माता बनकर ।
धन्य हुए हैं आज सभी तेरी आराधना कर
तुम करुणा का अवतार,
आया क्रिसमस का त्योहार।

कांटों का ताज पहना फिर भी मुख
पे शान्ति मन में न क्रोध भाव ,क्षमा की
अनुपम शक्ति
तुम्हारा निर्मल मन संसार,
आया क्रिसमस का त्योहार।

दूर गगन पर छाया था पीड़ा का अंधियारा
ईश्वर तेरे आने से चमका भाग्य- सितारा।
पूर्ण होंगे सारे मंगल कार्य ,
आया क्रिसमस का त्योहार।

हाय ये रोटी

अच्छाई की जड़ है रोटी
बुराई की जड़ भी है रोटी ।

करती है हर कुकर्म को प्रेरित
चोरी ,डकैती ,हत्या को उद्यत।

रोटी है अगर पेट में तो
सारा जहाँ खूबसूरत है।

नहीं तो जहाँ का हर वैभव
सुन्दर होकर भी बदसूरत है।

इस पेट की रोटी के लिए ही तो
आदमी खपता है सुबह से शाम तक।

भर पाता है कहीं अपना पेट
बड़ी जद्दोजहद मुश्किल से तब।

कोई गरीब हो या अमीर,
सभी जी तोड़ मेहनत करते हैं।

गांव , शहर हो या महानगर
भूख प्यास छोड़ भागते रहते हैं।

दो जून की रोटी के लिए ही तो
आदमी कितना संघर्ष करता है ?

गांव, नगर और घर क्या ?
अपने मां-बाप तक छोड़ देता है।

ईमानदारी से अगर मिली रोटी
तो जीवन में खुशियाँ बिखेर देती है।

और बेईमानी से अगर मिली
तो राहों में काँटे बिछा देती है

हाय ये रोटी तू ना होती
तो यह चोरी , डकैती क्यों होती ?

'आओ साथी अयोध्या चलकर राम- पर्व मनाएँ'

राम हमारी अयोध्या जन्मे
कण -कण राम बसे हैं,
सरयू नदी के तट पे
अयोध्या पावन नगरी बसे हैं।
पावन नगरी अयोध्या को
हम राम- नगरी बनाएँ ,
आओ साथी अयोध्या
चलकर राम- पर्व मनाएँ।

राजा दशरथ परम प्रतापी
अयोध्या नरेश हुए थे,
कैकेई सुमित्रा और कौशल्या के
चार पुत्र हुए थे।
राम, लक्ष्मण ,भरत ,
शत्रुघ्न के दर्शन कर आएँ,
आओ साथी अयोध्या चलकर
राम -पर्व मनाएँ।

राम हैं मर्यादा पुरुषोत्तम
परम पूज्य कहलाए,
सीता मैया आदर्श जननी
जग में पूजी जाएँ।
राम सीता के मंदिर को
हम जाकर शीश नवाएँ,
आओ साथी अयोध्या चलकर
राम -पर्व मनाएँ।

राम की महिमा गाने से ही
कष्ट निवारण होता,
राम नाम लेने से ही बस
मोक्ष प्राप्त हो जाता।
हम भी आज राम दर्शन से
थोड़ा पुण्य कमाएँ,
आओ साथी अयोध्या चलकर
राम पर्व मनाएँ।

'आओ साथी हम सब मिलकर कर्म के दीप जलाएँ।'

कर्म क्षेत्र से कभी न डिगना ,
धर्म क्षेत्र में कभी न झुकना।
चाहे कितनी मुश्किल आये ,
सत्य पंथ से कभी न हटना।
कोटि कोटि कोटि कंठों से,
हम पावन संदेश सुनाएं ।
आओ साथी हम सब मिलकर
कर्म के दीप जलाएं।

भेदभाव को दूर भगाकर,
एकता का भाव सिखाएं।
स्वार्थ निशा में सोये जग ,
को परमारथ सिखला दें ।
सुप्त भावनाओं को हम,
फिर से आज जगाएँ।
आओ साथी हम सब मिलकर
कर्म के दीप जलाएं ।।

कटुता की अंगार बुझा कर
जनमानस में प्रेम जगा दो।
दुश्मन आंख दिखाए गर तो,
शांत सिंधु में ज्वार उठा दो ।
उर वीणा के तारों .से हम ,
गीता ज्ञान सिखाएं ।
आओ साथी हम सब मिलकर
कर्म के दीप जलाएं।।

हाइकु

हे हनुमान
मंगल को जन्मे हो
पग वन्दन

पवनसुत
बिगड़ी संवारते
बाधा हटाते

हे बजरंगी
होते मंगल काम
लें तेरो नाम

सुन्दरकाण्ड
जो जन पाठ करें
कार्य पूर्ण हों

राम की कथा
हनुमानजी बिना
अपूर्ण कथा

कांधे बिठाया
भक्त हनुमान ने
राम लखन

आशा जाकड़ रचित

अंकुश (लघुकथा)

कुलदीप अपने दादा- दादी का लाडला पोता था क्योंकि तीन बहनों के बाद बड़ी मन्नतों के बाद उसका जन्म हुआ था। इसलिए दादा-दादी उस पर जान छिड़कते थे। उसकी हर जिद्द पूरी करते थे । जैसे-जैसे बड़ा होता गया, वह जिद्दी हो गया। हमेशा वह अपनी जिद्द मनवाने की कोशिश करता ।उसकी बहनें पढ़ती तो उनकी किताब ले लेता अगर नहीं देती तो रोने लगता ,अगर वे खेलती तो उनके खिलौने उठा लेता और अगर वे नहीं देती तो वह रोता और गुस्से में खिलौने फेंक देता या तोड़ देता।

बच्चियाँ जब दादा -दादी से शिकायत करती तो दादा-दादी कहते 'अरे छोटा भैया है'।कुलदीप की माँ अपने सास-ससुर से कहती अभी तो यह छोटा है जब बड़ा हो जाएगा ,स्कूल जाएगा और वहाँ ऐसा करेगा तो वहाँ क्या होगा ?दादा -दादी कहते 'अरे बड़ा हो जायेगा तब वह समझ जाएगा ।'

जब वह स्कूल जाने लगा तो स्कूल में भी किसी बच्चे की पेंसिल ,तो कभी किसी का कम्पास या बौटल उठा लेता और जब टीचर उसको मना करती तो वह रोने लगता । टीचर ने उसके माता-पिता को बुलाया और कुलदीप की शिकायत की तो कुलदीप की माँ कहने लगी कि कुलदीप को उसके दादा-दादी ने बहुत जिद्दी कर दिया है ।हम समझते हैं पर क्या करें?

टीचर ने कहा ' अरे क्या करें नहीं ,यह कोई छोटी बात नहीं है।

अरे आप इस पर अभी से अंकुश लगाइए नहीं तो यह बड़ा होने पर यह स्कूल ही नहीं आपको भी बहुत तकलीफ देगा। नहीं तो आप इसके दादा - दादी को हमारे पास भेजिए।

कुलदीप की माँ टीचर से बोली

पहले मैं उन पर ही अंकुश लगाऊँगी कि अधिक लाड - प्यार न करें और नहीं तो मैडम आपके पास भेजूँगी।

आशा जाकड़

असावधानी

सुधीर पढ़ने में बहुत होशियार था। हमेशा उसे अच्छे अंक प्राप्त होते थे।70 या 80इ दो उसके लिए मामूली बात थी ।एक बार परिवार में शादी थी तो उसने जल्दी में अपना ढंग से टाइम टेबल नहीं देखा और पेपर उसका साइंस का था,लेकिन उसने सोशल साइंस की पढ़ाई कर डाली और.वह खुशी -खुशी परीक्षा देने पहुंचा और जब उसके हाथ में पेपर आया उसने देखा कि पेपर तो साइंस का है तो पेपर देखकर उसके तोते उड़ने.लगे कि वह पूरा पेपर ठीक से हल नहीं कर पाएगा उसके पासिंग मार्क्स तो आ जाएंगे लेकिन अच्छे मार्क्स नहीं आएंगे। यह सोच कर बहुत देर तक वह चुपचाप बैठा रहा तभी उसके टीचर उसके पास आये और कहने लगे 'क्या बात है सुधीर आज तुम पेपर देखकर चुपचाप क्यों बैठे हो , लिखना शुरू करो ,क्या तबियत ठीक नहीं है'।

तो सुधीर ने कहा' सर आज मैं गलती से सोशल स्टडी की पढ़ाई करके आया मैंने टाइम टेबल ठीक से नहीं देखा'।

सर कहने लगे 'बेटा कोई बात नहीं तुम तो इतने अच्छे विद्यार्थी हो जितना तुम्हें आए उतना करो ।धैर्य रखो घबराने से कुछ नहीं होगा। आगे से ध्यान रखना हमेशा अपना टाइम टेबल अच्छी तरह देखकर फिर परीक्षा की तैयारी करना चाहिए। जरा सी असावधानी कितनी भारी पड़ जाती है । जरा सी भूल का परिणाम कितना दुखद होता है।

'जी सर 'कहकर सुधीर अपना पेपर हल करने लगा।

आशा जाकड़

मकर संक्रान्ति

मकर संक्रांति हिंदुओं का एक पावन पर्व है ।मकर संक्रांति सामान्यतः 14 जनवरी को ही मनाई जाती है क्योंकि 14 जनवरी के दिन सूर्य मकर राशि में प्रवेश करते हैं। दक्षिण भारत में तमिल वर्ष की शुरुआत इसी दिन से होती है और वहाँ यह पर्व पोंगल के नाम से जाना जाता है ।मकर संक्रांति को पंजाब में लोहड़ी पर्व 13 जनवरी अर्थात मकर संक्रांति से 1 दिन पहले मनाया जाता है। पर इस बार मकर संक्रांति 15 जनवरी को मनाई जा रही है। उत्तराखंड में इस पर्व को उत्तरायणी, गुजरात में उत्तरायण , केरल में पोंगल , गढ़वाल में खिचड़ी संक्राति के नाम से यह पर्व मनाया जाता है ।सिंधी लोग इस पर्व को तिरमौरी कहते हैं

मकर संक्रांति पर्व से जुड़ी मान्यताएँ

एक मान्यता के अनुसार आज के दिन शिव जी ने अपने साधकों पर विशेष रूप से ऋषियों पर कृपा की थी।

एक अन्य मत के अनुसार इस दिन शिव जी ने विष्णु जी को आत्मज्ञान का दान दिया था। देवताओं के दिनों की गणना इस दिन से ही प्रारंभ होती है। सूर्य जब दक्षिणायन में रहते हैं तो उस अवधि को देवताओं की रात्रि कहा जाता है उत्तरायण के छह माह को दिन कहा जाता है ।मनुष्य के 6 माह के बराबर देवताओं की एक दिन एक रात्रि होती है ।

यह भी कहा जाता है कि सूर्य अपने पुत्र शनि से मिलने उसके घर जाते हैं ।सूर्य और शनि का यह मिलाप मकर संक्रांति के रूप में मनाया जाता है

महाभारत की कथा के अनुसार भीष्म पितामह ने अपनी देह त्यागने के लिए मकर संक्रांति का दिन चुना था । कहा जाता है कि आज ही के दिन गंगाजी भगीरथ के पीछे-पीछे चलकर कपिल मुनि के आश्रम से होकर सागर में जा मिली थी इसलिए आज के दिन गंगा स्नान व तीर्थ स्थलों पर स्नान दान का विशेष महत्व माना गया है ।मकर संक्रांति के दिन तिल का सेवन और दान करना शुभ होता है। मकर संक्रान्ति के शुभ पर्व पर हरिद्वार , काशी आदि तीर्थों पर स्नानादि का विशेष महत्व है। इस दिन सूर्य देव के अतिरिक्त विष्णु देव की पूजा -उपासना भी की जाती है। यह पर्व विशेष रुप से दान-धर्म का पर्व है।

आशा जाकड़